अतिरिक्त भाग

"व्यवस्था" (*Nomos*) पर एक शब्द अध्ययन

रोमियों की पुस्तक में "व्यवस्था" (*nomos*) एक महत्वपूर्ण शब्द है जो 70 से अधिक बार मिलता है। मूल में *nomos* का अर्थ है "जो उचित था," "कोई भी नमूना, नियम, रीति।"[1] अन्त में यह "किसी राज्य द्वारा निर्देशित 'नियम' के लिए स्थापित नाम" बन गया।[2] परन्तु आज भी इसके कई अर्थ हैं, जैसे आज अंग्रेज़ी शब्द "law" में है। मेरी अंग्रेज़ी डिक्शनरी में "law" की चौदह परिभाषाएं दी गई हैं जिनमें सब के लिए अलग-अलग अर्थ हैं।[3] डग्लस जे. मू ने लिखा है, "*व्यवस्था*" शब्द का इस्तेमाल विस्मयकारी तरीकों में, सरकार द्वारा हम पर लगाई जाने वाली औपचारिक शर्तों से (उदाहरण के लिए, "देश का कानून") भौतिक संसार की सामान्य प्रवृत्तियों ("भौतिक के नियमों") ताकि के लिए किया जाता है।[4]

इसी प्रकार पौलुस ने "व्यवस्था" शब्द का इस्तेमाल अलग-अलग तरह से किया। उसने मेरी अंग्रेज़ी डिक्शनरी में पाए जाने वाले चौदह से अधिक अलग-अलग अर्थ नहीं लिए, परन्तु उसके उपयोग में काफ़ी विभिन्नता है। उदाहरण के लिए रोमियों 7:23 में उसने लिखा, "परन्तु मुझे अपने अंगों में दूसरे प्रकार की *व्यवस्था* दिखाई पड़ती है, जो मेरी बुद्धि की *व्यवस्था* से लड़ती है, और मुझे पाप की *व्यवस्था* के बन्धन में डालती है जो मेरे अंगों में है।"

अपने दिमाग में मैं "व्यवस्था" के अर्थों की परछाइयों की बात करते हुए जे. डी. थॉमस को सुन सकता हूं और मैं उसे बोर्ड पर एक सूची बनाते देख सकता हूं। मुझे लगता है कि उसने सात विभिन्नताएं बताई हैं, परन्तु रोमियों पर उसकी पुस्तक कहती है, "शायद इस शब्द के आठ या दस या यहां तक कि एक दर्जन अलग अलग अर्थ हैं।"[5] मेरी अपनी सूची में सात विभिन्नताएं हैं, परन्तु ये किसी न किसी तरह से भाई थॉमस द्वारा क्लास में दी गई सूची से अलग हो सकती हैं। निम्न परिभाषाएं सम्भावनाओं को खत्म नहीं कर देती, परन्तु हम अपने अध्ययनों में उनके अर्थों को देखते हुए इसके अर्थ की जटिल परछाइयों पर चर्चा कर सकते हैं। पौलुस के पत्र में "व्यवस्था" (*nomos*) का इस्तेमाल कुछ इस प्रकार किया गया है:

(1) *Nomos* का इस्तेमाल तौरेत अर्थात पुराने नियम की पहली पांच पुस्तकों के बहुत सीमित अर्थ में किया जा सकता है।[6] रोमियों 3:21 में स्पष्टतया *nomos* का वही अर्थ था जैसे पौलुस ने पुराने नियम को "व्यवस्था और भविष्यवक्ताओं" में विभाजित किया। रोमियों 7 में पौलुस ने कहा, "व्यवस्था यदि न कहती कि लालच मत कर, तो मैं लालच को न जानता" (आयत 7ख)। यह उद्धरण तौरेत (निर्गमन 20:17) से लिया गया है। कइयों का मानना है कि रोमियों की पुस्तक में *nomos* का अर्थ *हमेशा* "तौरेत" होता है। ऐसा विचार अति है परन्तु हम सहमत हो सकते हैं कि इस पत्र में यह *nomos* का एक मुख्य अर्थ है।

(2) सामान्य रूप में इसका अर्थ पुराना नियम हो सकता है। रोमियों 3:10-18 में पौलुस ने भजन संहिता और यशायाह से उद्धृत किया और फिर कहा, "कि *व्यवस्था* जो कुछ कहती है उन्हीं से कहती है, जो व्यवस्था के अधीन हैं" (आयत 19क)। उस वचन में पौलुस ने संकेत दिया कि पुराने नियम की पुस्तकें जो तौरेत में नहीं थीं "व्यवस्था" का भाग थीं।

(3) इसका आज भी व्यापक अर्थ हो सकता है, जो यह सुझाव देता है कि सामान्य अर्थ में

लिखित में हो या अलिखित, यह परमेश्वर की ओर से प्रकाशन है। परमेश्वर ने मौखिक परम्पराओं, अर्थात प्रकृति के द्वारा (1:19, 20), और विवेक के द्वारा (2:15) अन्यजाति संसार पर अपने आपको प्रकट किया था। पौलुस ने अन्यजातियों को ''अपने लिए आप ही व्यवस्था'' कहा (2:14)। वह यह कह सकता था कि बिना व्यवस्था के पाप नहीं है (देखें 4:5; 15:13), जबकि इसके साथ ही यह ज़ोर दिया कि सब पापी हैं (3:23)। वह यह कैसे कह सका? क्योंकि व्यवस्था ने यही *किया*: यहूदियों के पास परमेश्वर की ओर से मिली लिखित व्यवस्था थी जबकि अन्यजातियों के पास अलिखित व्यवस्था थी। ''व्यवस्था के द्वारा [जो यूनानी धर्म शास्त्र का मूल अर्थ है]'' यानी परमेश्वर के प्रकाशन से ''पाप की पहचान होती है'' (3:20ख)।

(4) *Nomos* के अर्थ को और विस्तार देने के लिए इसे सामान्य अर्थ में ''कानून'' यानी ''कानूनी शर्तें'' कहा जा सकता है जो परमेश्वर की ओर से या मनुष्य की ओर से, यानी परमेश्वर की प्रेरणा से या परमेश्वर की प्रेरणा रहित हो सकती हैं। इस अर्थ में इसका एक *विशेष* अर्थ ''कानूनी शर्त'' हो सकता है। रोमियों 7:2 में इसे सम्भवतया इसी अर्थ में समझा जाना चाहिए: ''यदि उसका पति मर जाए, [तो विवाहित स्त्री] पति की *व्यवस्था* से छूट गई।''

(5) *Nomos* का इस्तेमाल सामान्य अर्थ में करने पर इसका अर्थ आम तौर पर ''कानूनी प्रबन्ध'' होता है। हमने सुझाव दिया है कि हमारा उद्धार व्यवस्था के आधार पर नहीं होता, पौलुस के दिमाग में यह अर्थ अक्सर होता था। यानी हमारा उद्धार *किसी भी* ''कानूनी प्रबिन्ध'' के आधार पर नहीं होता। उदाहरण के लिए रोमियों 3:20 मूलतया इस प्रकार है, ''व्यवस्था [एक कानूनी प्रबन्ध] के कामों से कोई धर्मी नहीं ठहरेगा'' (3:20क)।

(6) रोमियों की पुस्तक में अधिकतर जगह, *nomos* शब्द ऊपर दी गई पांच परिभाषाओं में एक से मेल खाता है। परन्तु कई बार पौलुस ने इस शब्द को गौण अर्थ में इस्तेमाल किया। अंग्रेज़ी शब्द ''law'' की तरह यूनानी शब्द *nomos* ''सामान्य नियम'' का अर्थ दे सकता है।[7] ''Law'' कोई ''व्यक्ति के कामों, नियम, नमूने को संचालित करने का *नियम*'' हो सकता है।[8] रोमियों 3:27 में सम्भवतया इसका यही अर्थ है।

कई लोग यह ज़ोर देते हैं कि 3:27 में ''व्यवस्था'' का अर्थ ''कानूनी प्रबन्ध,'' या कम से कम ''प्रबन्ध'' है। इनमें से कई लोग ''व्यवस्था के कामों'' की परिभाषा ''एक प्रबन्ध जिसमें हम कामों से धर्मी ठहराए जाते हैं'' के रूप में देते हैं। ''विश्वास की व्यवस्था'' की परिभाषा ''विश्वास के द्वारा धर्मी ठहराए जाने के प्रबन्ध'' के रूप में की जाती है। इनमें से कुछ लोग ''कामों की व्यवस्था'' पुराने नियम के साथ और ''विश्वास की व्यवस्था'' नये नियम के साथ मिलाते हैं; परन्तु आम तौर पर अनुवादकों को ''नियम'' या मिलता जुलता कुछ (देखें NIV; RSV; NEB; AB) पसन्द है। जैसा कि पहले कहा गया है मुझे ''के आधार पर'' वाक्यांश पसंद है।

(7) ''नियम'' शब्द शायद इतना बड़ा है कि इसमें *नोमोस* का पौलुस का गौण इस्तेमाल शामिल नहीं हो सकता, परन्तु मैं रोमियों 7 के पूर्वानुमान अर्थात ''एक स्थापित प्रवृत्ति'' में एक छोड़ा सा अन्तर मिलाना चाहता हूं। डब्ल्यू. ई. वाईन ने लिखा है कि *nomos* का अर्थ ''कार्य करने के लिए विवश करने वाली शक्ति या प्रभाव'' हो सकता है। उसने उदाहरण के रूप में रोमियों 7:21,

23 दिया।[9] *दि थियोलॉज़िकल डिक्शनरी ऑफ़ द न्यू टैस्टामेंट* रोमियों 7 के संदर्भ में *nomos* की परिभाषा देते हुए "व्यवस्था" (जैसे व्यवस्था में) शब्द दिया गया है।[10] एफ़ .एफ़. ब्रूस ने कहा है कि 7:21 में पौलुस "एक व्यवस्था" यानी एक नियम या मानी जानी वाली निरन्तरता का पता लगाता है।"[11]

यहां पर कई लोग उलझ जाएंगे कि "यदि 'व्यवस्था' के कितने अर्थ हो सकते हैं, तो मुझे कैसे पता चल सकता है कि किसी आयत में इसका क्या अर्थ है?" दो मार्गदर्शक सहायक हो सकते हैं। पहला अर्थ मुख्यतया संदर्भ से तय होता है। दूसरा, प्राथमिकता गौण अर्थ (जैसे "नियम") के ऊपर प्रमुख हो। जैसा कि हमने देखा है, *nomos* का अर्थ आम तौर पर प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से तौरेत है या सामान्य अर्थ में पुराना नियम परन्तु और सम्भावनाओं को ध्यान में रखें।

टिप्पणियां

[1]ज्योफ्री डब्लयू. ब्रोमिले, *थियोलॉजिकल डिक्शनरी ऑफ़ द न्यू टैस्टामेंट,* सम्पा. गरहर्ड किट्ल एण्ड गरहर्ड फ्रेड्रिक, अनु. ज्योफ्री ब्रोमिले, abr. (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगनः विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1985), 646 में एच. क्लेनकचट, "*nomos.*" [2]वाईन, 354. [3]*अमेरिकन हेरीटेज डिक्शनरी,* चौथा संस्क. (2002), s.v. "law." [4]डग्लस जे. मू, *दि* NIV एप्लिकेशन कंमैंट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगनः ज़ौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, 2000), 87. [5]जे. डी. थॉमस, *रोमन्स,* द लिविंग वर्ड सीरीज़ (ऑस्टिन, टैक्ससः स्वीट पब्लिशिंग कं., 1965), 48. [6]इन पांच पुस्तकों को "व्यवस्था की पुस्तकें" या "पंचग्रंथ" कहा जाता है। [7]वाइन, 354–355. [8]वाल्टर बाउर, *ए ग्रीक-इंग्लिश लैक्सिकन आफ़ द न्यू टैस्टामैंट एंड अदर अर्ली क्रिश्चियन लिटरेचर,* दूसरा संस्क., संशो. विलियम एफ. अर्ड्ट एंड एफ. विल्बर गिंगरिक (शिकागोः यूनिवर्सिटी ऑफ़ शिकागो प्रेस, 1957), 544. [9]वाइन, 355. [10]ब्रोमिले, 652.

[11]ब्रूस, 51.

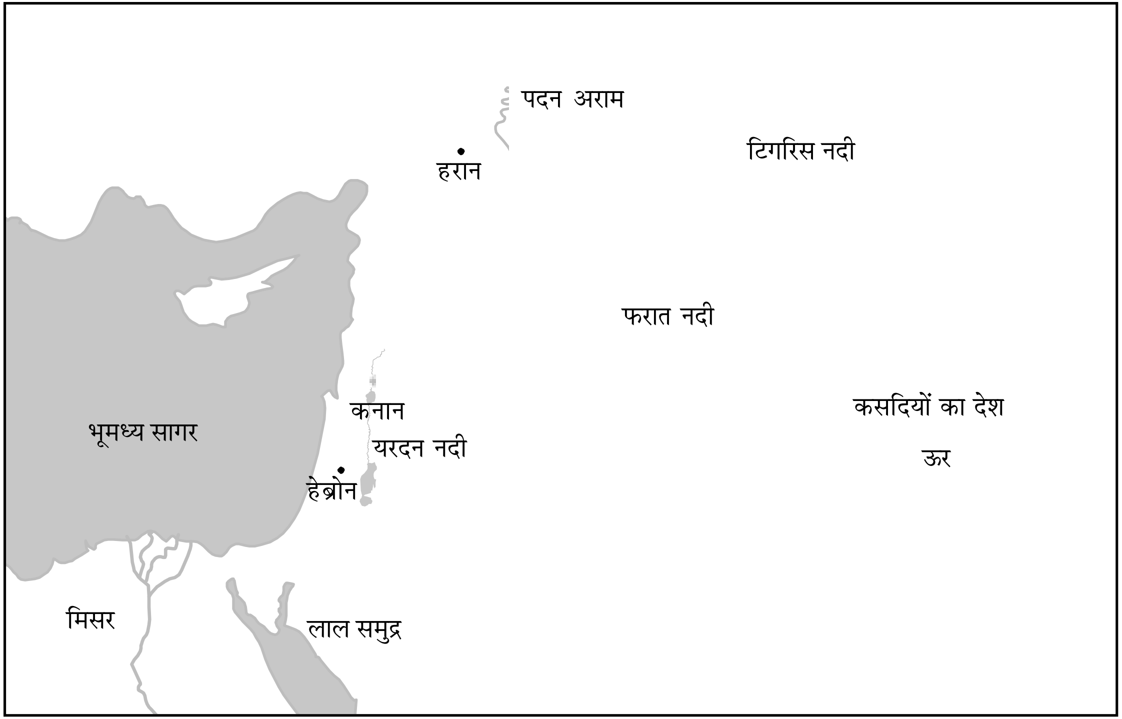

अब्राहम की यात्राओं का देश

अब्राहम के जीवन की घटनाएं

इस पुस्तक के चार पाठ रोमियों 4 अध्याय पर आधारित हैं। वह अध्याय अब्राहम के जीवन की घटनाओं को दर्शाता है। पौलुस के यहूदी पाठक अब्राहम और उसके जीवन के कालक्रम से परिचित होंगे। हम में से कुछ लोग इस पुरखे के बारे में इतना अधिक नहीं जानते, सो उसके जीवन की मुख्य घटनाओं की यह झलकी सहायक सिद्ध हो सकती है। रोमियों 4 का अध्ययन करते हुए आप इस पृष्ठ को देख सकते हैं।

(1) परमेश्वर ने अब्राम को कसदियों के ऊर से बुलाया। अब्राम हारान को चला गया (देखें उत्पत्ति 11:31; 15:7; नहेम्याह 9:7; प्रेरितों 7:2, 3)।

(2) जब अब्राम पचहत्तर वर्ष का था तो परमेश्वर ने उसके साथ एक वाचा बांधी और उसे कनान में जाने को कहा (देखें उत्पत्ति 12:1–4)।

(3) अब्राम कनान में चला गया। परमेश्वर ने अब्राम को बताया कि वह उसे और उसके वंशजों को देश देगा। (देखें उत्पत्ति 12:5, 7; 13:14–17; 15:18–21; 17:8.)

(4) दो अवसरों पर, भय के कारण, अब्राम ने अपने पत्नी सारै के विषय में "झूठ बोलने की गलती की" (देखें उत्पत्ति 12:10–20; 20:1–18.)

(5) कनान में परमेश्वर ने अब्राम को बताया कि उसके वंशज "पृथ्वी की धूल के किनकों के समान" होंगे। (देखें उत्पत्ति 13:16.)

(6) शालेम के राजा मलकिसिदक ने अब्राहम को आशीष दी। (देखें उत्पत्ति 14:17–20)

(7) पचासी साल की उम्र में, नि:संतान अब्राम ने परमेश्वर से पूछा कि क्या उसका सेवक उसका वारिस बन सकता है। परमेश्वर ने उसे आश्वस्त किया कि उसकी एक संतान होगी, और उसके वंशज आकाश के तारों की नाईं होंगे। "उसने यहोवा पर विश्वास किया; और यहोवा ने इस बात को उसके लेखे में धर्म गिना।" (देखें उत्पत्ति 15:2–6.)

(8) जब अब्राम छियासी वर्ष का था, तो सारै की दासी हाज़रा के द्वारा उसके एक पुत्र, इश्माएल का जन्म हुआ। अब्राम ने सारै को हाज़रा के साथ कठोरतापूर्वक बर्ताव करने दिया। (देखें उत्पत्ति 16:1–6.)

(9) जब अब्राहम निन्यानवे वर्ष का हुआ तो परमेश्वर ने उसका नाम बदलकर अब्राम रख दिया और खतने की रीति आरम्भ की। (देखें उत्पत्ति 17:1–6, 10–14, 23–27.)

(10) परमेश्वर ने अब्राहम से प्रतिज्ञा की कि सारै/सारा के एक पुत्र (इसहाक) होगा। अब्राहम को इस प्रतिज्ञा को मसझना कठिन लगा और उसे पूछा कि क्या इश्माइल उसका वारिस होगा, परन्तु परमेश्वर ने कहा नहीं। (देखें उत्पत्ति 17:15–19.)

(11) जब अब्राहम सौ साल का हुआ, तो परमेश्वर की प्रतिज्ञा के अनुसार इसहाक जन्मा (देखें उत्पत्ति 21:1–7)।

(12) जब इसहाक बड़ा हुआ, तो परमेश्वर ने अब्राहम को उसे होमबलि के रूप में बलिदान करने के लिए कहा। जब इसहाक को बलिदान करने के प्रयास के द्वारा अब्राहम की यह परीक्षा हुई, तो परमेश्वर ने उसके साथ की गई अपनी वाचा दोहराई। उत्पत्ति 22:18क में उसने कहा,

''पृथ्वी की सारी जातियां अपने को तेरे वंश के कारण धन्य मानेंगी।'' (देखें उत्पत्ति 22:1-18; इब्रानियों 11:17-19; याकूब 2:21-23.)

(13) 127 साल की उम्र में सारा की मृत्यु हो गई। अब्राहम ने कब्रिस्तान के लिए मकपेला वाली गुफ़ा खरीद ली। कनान में अब्राहम की एकमात्र भूमि केवल यही थी। (देखें उत्पत्ति 23:1-20; प्रेरितों 7:5; इब्रानियों 11:8-10.)

(14) बाद में, अब्राहम ने कतूरा नाम की पत्नी (या रखैल) कर ली, जिसके कई पुत्र थे। (देखें उत्पत्ति 25:1-4.)

(15) अब्राहम की मृत्यु 175 की उम्र में हुई और उसे सारा के साथ दफ़ना दिया गया (देखें उत्पत्ति 25:7-10)।

“अब्राहम का विश्वास ...” (उत्पत्ति 15:6)

आयु	अज्ञात	75	अज्ञात	85	99	100	अज्ञात
अब्राहम को परमेश्वर का वचन	“उस देश में जा जो मैं तुझे दिखाऊंगा”	“उस देश में जा जो मैं तुझे दिखाऊंगा”; “मैं तुझे एक बड़ी जाति बनाऊंगा”	“मैं तुझे यह भूमि दूंगा और तेरे वंश को पृथ्वी की धूल के किनकों के समान बहुत करूंगा।”	“मैं तुझे एक पुत्र दूंगा और तेरे वंशजों को तारों की तरह बनाऊंगा।” (देश देने की प्रतिज्ञा)	“मैं तुझे बहुत सी जातियों का पिता बनाऊंगा” (देश देने की प्रतिज्ञा) (खतना)		“अपने पुत्र को ले और उसे बलि करके चढ़ा”; “मैं तेरे वंश को आकाश के तारागण के समान करूंगा।”
उत्पत्ति में हवाले	उत्पत्ति 11:21	उत्पत्ति 12:1–8	उत्पत्ति 13:14–17	उत्पत्ति 15:5, 6, 18 (देखें उत्पत्ति 16:3, 16)	उत्पत्ति 17:1–14	उत्पत्ति 21:1–5	उत्पत्ति 22:1–18
अब्राहम का उत्तर या परिणाम	अब्राहम ऊर को छोड़कर हारान में चला गया	अब्राहम हारान से निकलकर कनान में गया				इसहाक का जन्म हुआ।	
नये नियम में उत्पत्ति 15:6 के हवाले		गलातियों 3:6–9		रोमियों 4:3, 9, 22, 23			याकूब 2:21–23

''उपदेश का वह सांचा''
(6:3-6, 17, 18)

जे. डी. थॉमस ने कहा कि रोमियों 6 ''नये नियम में मसीही बपतिस्मे के स्थान और उद्देश्य और कार्य की सबसे सम्पूर्ण और पूरी चर्चा है।''[1] निश्चय ही बपतिस्मे के विषय में पौलुस द्वारा कुछ रोमी मसीहियों को बताए वचन से लेकर उसे अपने ऊपर लागू करने का महत्व है। अगला प्रवचन ऐसा करने का एक ढंग है।

प्रस्तुति के साथ चलने के लिए फलालेन का एक चार्ट तैयार किया गया। एक बार में उस बोर्ड पर सब टुकड़े रख दिए गए।[2] बोर्ड पर टुकड़े कब-कब रखे गए उसका संकेत टिप्पणियों में मिलता है। इस चार्ट का इस्तेमाल बोर्ड पर या प्रोजेक्टर पर या पावर प्वायंट के लिए किया जा सकता है।

1 कुरिन्थियों 15:1-4 में पौलुस ने कहा कि मसीह की मृत्यु, गाड़ा जाना और जी उठना, सुसमाचार के सार की तीन मूल बातें हैं। इसे सच मानते हुए, ''सुसमाचार की बात मानना'' पढ़कर थोड़ी उलझन होती है (देखें 2 थिस्सलुनीकियों 1:8; 1 पतरस 4:17 [और KJV में रोमियों 10:16])। हम *तथ्यों* की आज्ञा कैसे मान सकते हैं? पौलुस ने रोमियों 6 में हमें एक उत्तर दिया:

> परन्तु परमेश्वर का धन्यवाद हो, कि तुम जो पाप के दास थे तौभी मन से उस *उपदेश* के मानने वाले हो गए, जिस के *सांचे* में ढाले गए थे। और पाप से छुड़ाए जाकर धर्म के दास हो गए (आयतें 17, 18)

तथ्यों की आज्ञा नहीं मान सकते, परन्तु तथ्यों के *सांचे* की बात तो मान सकते हैं। पौलुस ने रोमियों 6:3, 4 में समझाया कि हम ऐसा कैसे कर सकते हैं:

> क्या तुम नहीं जानते, कि हम जितनों ने मसीह यीशु का बपतिस्मा लिया, तो उस की *मृत्यु* का (में) बपतिस्मा लिया? सो उस मृत्यु का (में) बपतिस्मा पाने से हम उसके साथ *गाड़े गए,* ताकि जैसे मसीह पिता की महिमा के द्वारा मरे हुओं में से *जिलाया गया,* वैसे ही हम भी नए जीवन की सी चाल चलें।

जैसे मसीह क्रूस पर *मरा*[3] वैसे ही हम पाप के लिए मरते हैं (देखें आयत 2)। जब हम यीशु में विश्वास करके, अपने पापों से मन फिराकर अपने प्रभु की बात मानते हैं। हम ''उसकी मृत्यु का बपतिस्मा'' लेते हैं (आयत 3)।[4] मसीह को अरिमतिया के यूसुफ़ की नई कब्र में *दफ़नाया गया* था और हम बपतिस्मे के पानी में ''दफ़नाए'' जाते हैं (आयत 4)।[5] किसी को कफ़न पर मुट्ठी भर मिट्टी डालने से उसे *दफ़नाया* नहीं जाता, और हम अपने सिरों पर पानी की कुछ बूंदे छिड़कने से *दफ़नाए* नहीं जाते। बाइबल के अनुसार बपतिस्मा पानी में डुबकी है।

मसीह कब्र में नहीं रहा; बल्कि वह तीसरे दिन *जी उठा* था और हम भी पानी रूपी कब्र में से जी उठते हैं। जिम मैक्गुइगन ने कहा है, ''जब भी मैं किसी के बपतिस्मा लेने पर पानी की छप - छपाहट सुनता हूं, तो मैं कब्र से पत्थर के हटाए जाने की आवाज़ सुनने की कल्पना करता हूं।''[6] हमें ''नये जीवन की सी चाल'' चलने के लिए जिलाया जाता है (आयत 4)।[7] ध्यान दें कि जीवन का यह नयापन बपतिस्मा लेने से *पहले* नहीं बल्कि हमारा *बाद* का जीवन है। बिल बेनोव्स्की ने लिखा है, ''तुरन्त बपतिस्मा एक जीवन के अन्त का संकेत देता है, यह दूसरे के आरम्भ का चिह्न है। बपतिस्मा न केवल मृत्यु को बल्कि नये जन्म को दर्शाता है।''[8]

मैं लोगों को जब बपतिस्मा देता हूं तो अक्सर कहता हूं, ''मैं तुम्हें पानी के अन्दर वैसे ही डाल रहा हूं, जैसे कब्र में मसीह की देह को रखा गया था। फिर मैं तुम्हें पानी से निकाल लूंगा जैसे मसीह तीसरे दिन जी उठा था। मेरे तुम्हें बपतिस्मा देने पर मैं चाहता हूं कि तुम मसीह की मृत्यु, गाड़े जाने और जी उठने पर ध्यान करते रहो।''

पौलुस को यह आवश्यक लगा कि हम बपतिस्मे और मसीह की मृत्यु ''गाड़े जाने और जी उठने'' के निकट सम्बन्ध को समझ लें। इसी कारण अगली दो आयतों में उसने बार-बार अपने विचार दोहराए:

> क्योंकि यदि हम उसकी मृत्यु की समानता में उसके साथ जुट गए हैं, तो निश्चय उसके जी उठने की समानता में भी जुट जाएंगे। क्योंकि हम जानते हैं, कि हमारा पुराना मनुष्यत्व उसके साथ क्रूस पर चढ़ाया गया, ताकि पाप का शरीर व्यर्थ हो जाए, ताकि हम आगे को पाप के दासत्व में न रहें (आयतें 5, 6)।

आयत 5 में पौलुस ने कहा कि हम मसीह के साथ ''उसकी मृत्यु की समानता में'' हैं।[9] और इसलिए हम उसके साथ ''जुट गए'' या ''रोपे गए'' हैं (KJV)।[10] ऐसा ही है, इसलिए हम ''उसके जी उठने की समानता'' में भी जी उठेंगे।[11] आयत 6 में पौलुस ने कहा है कि ''हमारा पुराना मनुष्यत्व उसके साथ क्रूस पर चढ़ाया गया,[12] ताकि पाप का शरीर व्यर्थ हो जाए।''[13] जिसका परिणाम यह हुआ कि हम ''अब ... पाप के दास नहीं'' रहे।[14]

क्या यह अद्भुत बात नहीं है कि जब हम ''उपदेश के उस सांचे'' को मानते हैं तो परमेश्वर हमारे साथ और हमारे लिए क्या करता है? परन्तु इस बात को समझें कि पौलुस केवल ''सांचे में से गुज़रने'' की ही बात नहीं कर रहा था। उसने कहा, ''तुम *मन से* उस उपदेश के मानने वाले हो गए, जिस के सांचे में ढाले गए थे'' (आयत 17)। यदि किसी का मन इसमें नहीं है, यानी उसे वास्तव में प्रभु में विश्वास नहीं है और वास्तव में अपना जीवन प्रभु को नहीं देता, तो वह बपतिस्मा नहीं ले रहा बल्कि केवल नहा रहा है।

यदि हमारा आज्ञा मानना मन से है, तो ध्यान दें कि हमारे बपतिस्मा लेने पर पौलुस ने क्या कहा कि होता है। बपतिस्मा लेने से *पहले* हम ''पाप के दास'' होते हैं[15] (आयत 17)। बपतिस्मा लेने के *बाद* हम ''पाप से छुड़ाए'' जाते हैं[16] (आयत 18)।

बपतिस्मे और मसीह की मृत्यु, गाड़े जाने और जी उठने में सम्बन्ध को फिर से देखें। हमारे प्रभु की मृत्यु, गाड़े जाने और जी उठने के बिना बपतिस्मे का कोई अर्थ नहीं है। कल्पना करें कि

आपको बपतिस्मे के बारे में कुछ मालूम नहीं है, आपने इसके बारे में कभी नहीं सुना है। फिर दो लोगों को पानी के एक कुंड में जाने और उनमें से एक को दूसरे को पानी में नीचे डुबोते देखने की कल्पना करें। क्या यह बेतुका काम जैसा नहीं लगेगा? बपतिस्मे को जब उससे जोड़ा जाता है जो *यीशु ने किया* तभी इसका अर्थ और मान्यता बनती है। कई बार मुझसे पूछा जाता है, डिनोमिनेशन के बपतिस्मे में क्या बुराई है? इसका सीधा सा जवाब है कि आम तौर पर डिनोमिनेशनों द्वारा सिखाया और दिया जाने वाला बपतिस्मा बपतिस्मे व मसीह की मृत्यु, गाड़े जाने और जी उठने के सम्बन्ध को नष्ट करता है।

- उदाहरण के लिए, कुछ लोग बच्चों को ''बपतिस्मा देते'' हैं-परन्तु बच्चे ''पाप में मरे'' नहीं हैं और ''पाप के लिए मरे'' नहीं हैं। इस प्रकार मसीह की *मृत्यु* से इसका सम्बन्ध नष्ट हो जाता है।[17]
- कुछ लोग पानी छिड़कते हैं और उसे बपतिस्मे का नाम देते हैं, परन्तु छिड़काव करना बपतिस्मे का सही रूपक नहीं है। इस प्रकार मसीह के *गाड़े जाने* का सम्बन्ध नष्ट होता है।
- इसके अलावा कुछ लोग जो डुबकी देते हैं यह ज़ोर देते हैं कि लोगों का उद्धार बपतिस्मा लेने *से पहले* होता है। वे ''जीवन का नयापन'' को बपतिस्मे से पहले रखते हैं, न कि बाद में। उनकी डॉक्ट्रिन के अनुसार, वे जीवित लोगों को ''दफ़नाते'' हैं। मसीह के *जी उठने* से सम्बन्ध नष्ट हो जाता है।

6:1-11 में पौलुस के शब्दों के सम्बन्ध में, विलियम बार्कले ने कहा, ''हमें इस बात को समझना आवश्यक है कि उसके समय में बपतिस्मा आज दिए जाने वाले बपतिस्मे से अलग था।'' उसने लिखा कि पौलुस के समय में बपतिस्मा ''वयस्क को दिया जाने वाला बपतिस्मा था,'' विश्वास के अंगीकार से जुड़ा था, और ''सामान्यतया पूरी तरह से डुबकी से दिया जाता था।''[18] निश्चय ही हम सहमत हो सकते हैं कि आज दिया जाने वाला बपतिस्मा आम तौर पर रोमियों 6 में वर्णित बपतिस्मे से अलग है। परन्तु इसे किसने बदला? परमेश्वर ने तो नहीं, परन्तु मनुष्य ने बदला है। पतरस ने कहा, ''मनुष्यों की आज्ञा से बढ़कर परमेश्वर की आज्ञा का पालन करना ही कर्तव्य कर्म है'' (प्रेरितों 5:29)।

सारांश

हम में से कई लोगों को उस जगह जाना अच्छा लगेगा जहां मसीह मरा, गाड़ा गया और मुर्दों में से जी उठा था। उस कब्र में जाना रोमांचकारी होगा जहां उसे रखा गया था; ठण्डे, सख्त पत्थर पर लेटना और फिर उसकी तरह कब्र में से बाहर आना। हम में से अधिकतर लोगों के लिए वहां जाने की बात पर कोई संदेह नहीं है, परन्तु परमेश्वर ने आपको इससे भी अधिक रोमांचकारी सम्भावना दी है। आप उसकी मृत्यु में बपतिस्मा ले सकते हैं। आप पानी में वैसे ही लेट सकते हैं जैसे उसे कब्र में रखा गया था। आप नये जीवन की चाल चलने के लिए वैसे ही जी उठ सकते

हैं जैसे अपनी जी उठी देह में से वह कब्र में से निकल आया था!

अन्त में मैं पूछता हूं, "क्या आपने 'उपदेश के उस सांचे' को मन से मान लिया है ?"[19] यदि नहीं तो मैं आपसे आज ही उसे मानने का आग्रह करता हूं।

सिखाने वालों तथा प्रचारकों के लिए नोट्स

इस पाठ के लिए नोट्स जानबूझकर छोटे रखे गए हैं क्योंकि इस पुस्तक में रोमियों 6 पर वचन से जुड़े पाठों से जानकारी लेकर बढ़ाया जा सकता है। टिप्पणियों में आप देखेंगे कि इस पाठ के आरम्भ में दिए गए उदाहरण में दिखाए टुकड़ों के अलावा, मैं "निकालने" (नकारने) के लिए फलालेन की प्रस्तुति में "X" के आकार का एक बड़ा टुकड़ा इस्तेमाल करता हूं। बोर्ड पर आप चाक से चक्करों में क्रॉस लगा सकते हैं। प्रोजेक्टर में आप गत्ते का टुकड़ा इस्तेमाल कर सकते हैं जिसे स्क्रीन पर रखा जाए और फिर एक से दूसरे चक्कर में लगाया जाए। "X" वाली नई स्लाइडें पावरप्वायंट की प्रस्तुति के लिए बनाई जा सकती हैं।

टिप्पणियां

[1]जे. डी. थॉमस, *रोमन्स,* दि लिविंग वर्ड सीरीज़ (आस्टिन, टैक्ससः स्वीट पब्लिशिंग कं., 1965), 43. [2]पाठ के आरम्भ होने पर, शीर्षक और वचन के हवाले बोर्ड पर सबसे ऊपर हैं। इसके अलावा बोर्ड के केन्द्र में "म-का-जी" वाला रेखाचित्र पहले से दिखाया गया है। चक्करों के बीच रेखाएं बनाने के लिए पिनों से खींचा गया काला धागा इस्तेमाल किया जा सकता है। लहरदार रेखा, पानी का संकेत देने के लिए नीचे धागे का इस्तेमाल किया जा सकता है। [3]"मृत्यु" वाले चक्कर के ऊपर एक छोटा-सा क्रूस चिपकाएं। [4]चार्ट पर "उसकी मृत्यु में" चिपकाएं। [5]चार्ट पर "गाड़े गए" चिपकाएं। [6]डेल हार्टमैन, ईस्टसाइड चर्च ऑफ़ क्राइस्ट, मिडवेस्ट सिटी, ओक्लाहोमा, 7 मार्च 2004 को दिए गए प्रवचन में उद्धृत। [7]चार्ट में "जीवन का नयापन" चिपकाएं। नये जीवन के साथ दर्शाने के लिए "पुनः" चक्कर के ऊपर एक चमकती हुई आकृति का चिह्न लगाएं। [8]विलियम एस. बेनोव्स्की, "दि वैक्सीन अगेंस्ट डेथ," दि न्यू जनरेशन एण्ड अथर सरमन्स (आस्टिन, टैक्ससः स्वीट पब्लिशिंग कं., 1969), 28. [9]चार्ट में "मृत्यु की समानता" जोड़ें। [10]चार्ट में "एक जुट/रोपे गए" जोड़ें।

[11]चार्ट में "जी उठने की समानता" जोड़ें। [12]चार्ट में "पुराना मनुष्यत्व क्रूस पर चढ़ाया गया" जोड़ें। [13]चार्ट में "पाप का शरीर व्यर्थ किया गया" जोड़ें। [14]चार्ट में "अब पाप के दास नहीं रहे" जोड़ें। [15]चार्ट में "पाप के दास" जोड़ें। ध्यान दें कि इस टुकड़े पर एक तीर है। [16]चार्ट पर "पाप से छुड़ाए गए" जोड़ें। ध्यान दें कि इस टुकड़े पर एक तीर है। [17]मेरे पास स्वेड के ऊपर लगा "x" है जिसे मैं "नकारने" के लिए "म" वाले चक्कर पर रखता हूं। इस "x" को चर्चा करते हुए "गा" और "जी" वाले चक्करों पर ले जाया जाता है। [18]विलियम बार्कले, *दि लैटर टू द रोमन्स,* संशो. संस्क., दि डेली स्टडी बाइबल सीरीज़ (फिलाडेल्फियाः वेस्टमिंस्टर प्रैस, 1975), 83-84. हम बार्कले के शब्दों में थोड़ा सा सुधार करेंगे, परन्तु यह नये नियम की बात से बहुत मेल खाता है कि बपतिस्मा क्या था। [19]इस प्रश्न को चार्ट के नीचे लगाएं।

“उपदेश का वह सांचा”
(6:3-6, 17, 18)

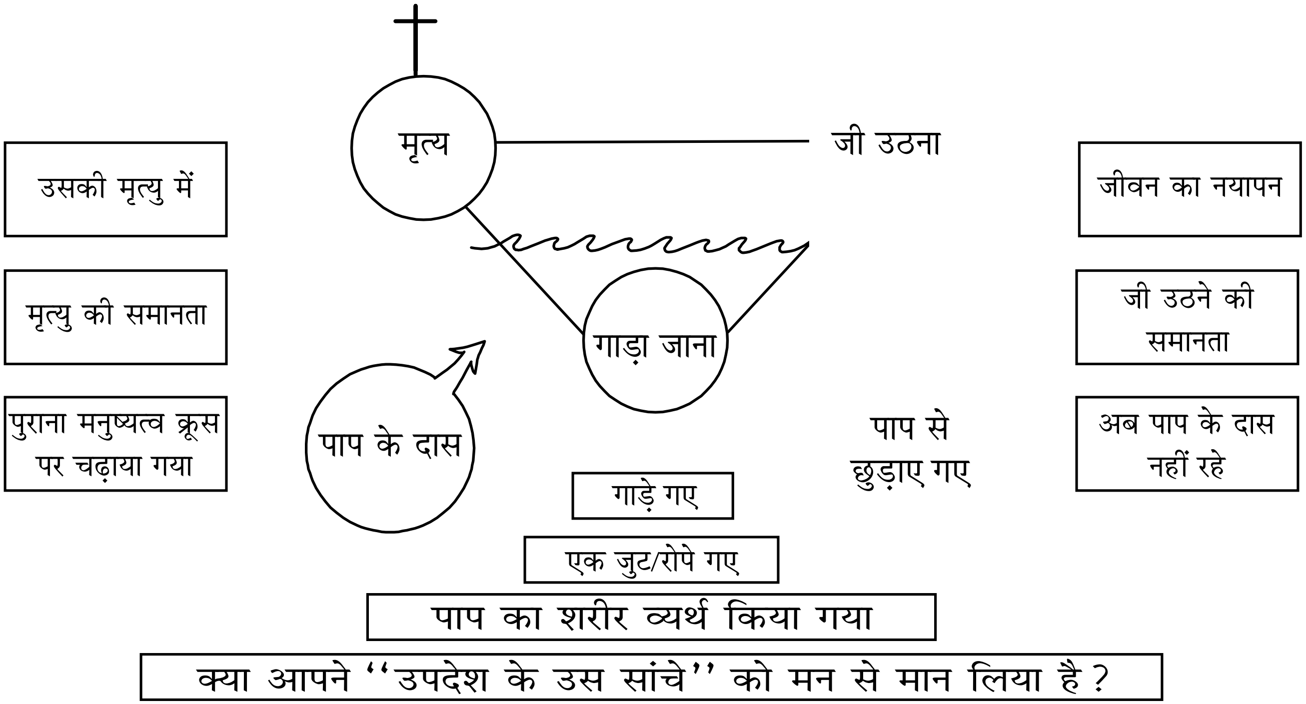

क्या पुनः बपतिस्मा आवश्यक है ?

रोमियों 6 में बपतिस्मे पर पौलुस की शिक्षा पर चर्चा करने पर "पुनः बपतिस्मा" का सवाल अक्सर उठता है। "यदि मुझे सचमुच पता ही नहीं था कि बपतिस्मा क्या है, तो क्या मुझे पुनः बपतिस्मा लेना आवश्यक है ? क्या वे लोग जिन्होंने डिनोमिनेशन का बपतिस्मा लिया है उन्हें पुनः बपतिस्मा लेने की आवश्यकता है ?" मैं इसे "पुनः डुबकी" कहना पसन्द करता हूं। प्रेरितों 19:1-5 में हम कुछ लोगों के बारे में पढ़ते हैं जिन्हें यह पता चलने पर पौलुस द्वारा पुनः बपतिस्मा दिया गया था, उन्हें बपतिस्मा लेने के समय इसकी समझ नहीं थी।

आमतौर पर जब मैं डिनोमिनेशन वाली पृष्ठभूमि के किसी व्यक्ति को सिखाता हूं, तो वह मुझसे पूछता है, "तो क्या मुझे *दोबारा बपतिस्मा* लेना आवश्यक है ?" आम तौर पर मेरा उत्तर होता है, आपको नये नियम में बताए गए नमूने के अनुसार *बपतिस्मा* लेना आवश्यक है। फिर हम उसके बपतिस्मे की तुलना पौलुस और परमेश्वर की प्रेरणा पाए हुए और लोगों द्वारा दिए जाने वाले बपतिस्मे से करते हैं। उदाहरण के लिए हम यह देख सकते हैं कि उसका बपतिस्मा 3 और 4 आयतों में बताए "उपदेश के सांचे" (आयत 17) से मेल खाता है कि नहीं। (इस पुस्तक में पहले आए पाठ "उपदेश का वह सांचा" में देखें।) यदि किसी को बचपन में "बपतिस्मा दिया गया," अर्थात उस पर पानी से छिड़काव किया गया, या उस डिनोमिनेशन का सदस्य बनने के लिए, बपतिस्मा दिया गया तो यह तय करना कठिन नहीं है कि उसे बपतिस्मा दिया जाना आवश्यक है।

उन लोगों द्वारा जिन्हें पापों की क्षमा के लिए अपने विश्वास को दिखाने के रूप में डुबकी दी गई, पूछा जाने वाला प्रश्न कठिन होता है (प्रेरितों 2:38)। रोमियों 6 का अध्ययन करते हुए वे निष्कर्ष निकालते हैं, "बपतिस्मे के बारे में उसमें इतना कुछ है कि मुझे इसका अहसास नहीं है ! मुझे नहीं लगता कि मुझे पता था कि मेरा बपतिस्मा वचन के अनुसार ही हो रहा है।" यदि कोई अपने बपतिस्मे की वैधता के बारे में गम्भीरतापूर्वक सोचता, तो मैं उसे दोबारा बपतिस्मा लेने से निराश करने में अधिक प्रयास नहीं करता। मैंने ऐसी सोच रखने वाले कई लोगों को डुबकी दी है। ऐसा करने से पहले मेरी कुछ ऐसी ही प्रार्थना होती है:

> "प्रभु, तू [व्यक्ति का नाम] के मन को जानता है। तू ही जानता है कि उसने जो बपतिस्मा लिया था वह सही है या नहीं। यदि वह सही था तो इस डुबकी को यह सुनिश्चित करने की उसकी इच्छा दिखाने के रूप में स्वीकार करना कि सब कुछ तेरे साथ उसके सही सम्बन्ध बनाने के लिए है। परन्तु यदि उसके पहले बपतिस्मे में कोई त्रुटि थी, तो इसे अपनी इच्छा में उसके समर्पण के रूप में स्वीकार करना ताकि वह तेरा विश्वासयोग्य बालक बन सके।"

इसके साथ ही मैं उन लोगों को जिन्हें कलीसिया का सदस्य माना जाता है रोमियों 6:3-6 का अध्ययन करने से बपतिस्मे पर उनकी समझ बढ़ने पर दोबारा बपतिस्मा लेने के लिए कभी *प्रोत्साहित* नहीं करता। पहली बात तो यह है कि ग्रेट कमीशन के अनुसार, परमेश्वर की इच्छा है कि हम बपतिस्मा लेने *के बाद* ज्ञान और समझ में बढ़ें (मत्ती 28:18-20)। दूसरी बात रोमियों

की पुस्तक कलीसिया की स्थापना के दो से अधिक दशक बाद लिखी गई थी। लाखों या शायद करोड़ों लोगों ने इस वचन को पढ़ने या इसका अध्ययन करने की आशीष के बिना ही बपतिस्मा लिया था। मुझे नहीं लगता है कि सब जीवित मसीही लोगों ने कलीसियाओं में रोमियों की पत्री बांटे जाने पर फिर से डुबकी ली होगी।

हम में से अधिकतर लोगों ने विवाह में शामिल सब बातों की सीमित समझ के साथ अपने विवाह का करार किया होगा। उस समर्पण के प्रति हमारी समझ के बढ़ने का अर्थ यह नहीं है कि हमें फिर से शादी करानी चाहिए। इसका अर्थ सम्भवतया यह है कि हम विवाह के सम्बन्ध में परिपक्व हो रहे हैं। रोमियों 6:3-6 बपतिस्मा लिए जाने के समय की आपकी समझ को बढ़ा सकता है। आवश्यक नहीं है कि इसका अर्थ आपको दोबारा बपतिस्मा लेना होगा। इसका अर्थ यह हो सकता है कि आप एक मसीही के रूप में बढ़ रहे हैं।

पहला आदम और अन्तिम आदम (मसीह)
(रोमियों 5:12-21)

आदम	मसीह
एक मनुष्य अर्थात आदम के द्वारा पाप ने संसार में प्रवेश किया (आयत 12)	एक मनुष्य अर्थात यीशु मसीह के द्वारा संसार को उद्धार की पेशकश की जाती है (देखें 1 थिस्सलुनीकियों 5:9)
एक अपराध से सब पर दण्ड और मृत्यु आई (आयतें 12, 15-18)	धार्मिकता के एक काम से सब मनुष्यों के लिए धर्मी ठहराए जाने का जीवन आया (आयत 18)
एक मनुष्य के आज्ञा न मानने से कई लोग पापी बन गए (आयत 19)	एक के आज्ञा मानने से, कई धर्मी ठहराए जाएंगे (आयत 19)
एक मनुष्य के द्वारा, मृत्यु सब मनुष्यों में फैल गई (आयत 12; देखें आयत 15)	परमेश्वर का अनुग्रह और दान एक मनुष्य अर्थात यीशु के अनुग्रह से, बहुतों को बहुतायत से मिलता है (आयत 15)
एक अपराध से, न्याय का फल हुआ (आयत 16)	कई अपराधों से, मुफ़्त वरदान मिला (आयत 16)
इसका परिणाम दण्ड था (आयत 16)	परिणाम धर्मी ठहराया जाना था (आयत 16)
एक के द्वारा मृत्यु ने राज किया (आयत 14; देखें आयत 21)	धार्मिकता के द्वारा अनुग्रह एक के द्वारा अनन्त जीवन के लिए राज करता है (आयत 21)

यह चार्ट रिचर्ड रोजर्स, *एक्सपेंडेड आउटलाइन ऑफ़ रोमन्स,* क्लास नोट्स, सनसैट स्कूल ऑफ प्रीचिंग, लब्बॉक, टैक्सस (तिथि नहीं), 18; लैरी डियसन, *''दि राइटियसनेस ऑफ़ गॉड'': एन इन-डेप्थ स्टडी ऑफ रोमन्स,* संशो. (कलिफ्टन पार्क, न्यू यॉर्क: लाइफ कम्युनिकेशंस, 1989), 145 से लिया गया था।